अेक गलतीके खिलाफ दूसरी गलती

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स न० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ | सम्पादक : मगनभाअी प्रभुदास देसाअी | अंक २९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १९ सितम्बर, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशम रु० ८; शि० १४

शिक्षा और सेवा

बड़ोदाके अेक भाअी 'हरिजन' के ग्राहक हैं। वे व्यवस्थापकको अंग्रेजीमें अेक लम्बा पत्र लिखकर बताते हैं कि वे 'हरिजन' के ग्राहक नहीं बने रहना चाहते। अिसके कारणकी भी वे अपने पत्रमें चर्चा करते हैं। वे कहते हैं कि स्वर्गीय किशोरलालभाअीके बाद पत्रका बल घटा है, अुसमें मौलिक समालोचनाका गुण देखनेको नहीं मिलता — वगैरा। पत्रलेखककी अिस शिकायतके बारेमें मुझे कुछ कहना नहीं है। मैंने जब यह काम अपने सिर लिया था, तभी अपनी वृत्ति बता दी थी कि कहां बापू, महादेवभाअी और किशोरलालभाअी जैसे पूर्वाचार्य और कहां मैं? लेकिन मेरे लिअे यह काम कर्तव्यरूप है। अपनी शक्ति और समझके अनुसार मैं परमेश्वरके नाम पर अिस कर्तव्यको पूरा करनेका प्रयत्न करता हूं। यह भी कह दूं कि अिन भाअीकी शिकायत जैसी कम ही शिकायतें मेरे पास आअी हैं। देश-विदेशके अनेक लोगोंने अिसके बारेमें संतोष प्रकट किया है और कहा है कि हमें 'हरिजन' पत्र पहले जैसे ही काम देते हैं। लेकिन मेरे अिस कथनको कोअी बचाव या आत्मश्लाघाके रूपमें न मानें। मेरे कहनेका अर्थ अितना ही है कि हरअेककी अपनी-अपनी राय हो सकती है।

पाठक जानते हैं कि ये पत्र केवल कुछ लिखनेके लिअे नहीं चलाये गये या चलाये जाते हैं। अुनके द्वारा देशके कार्य करनेका ध्येय हमेशा सामने रहा है। और वे कार्य रचनात्मक कार्य हैं, जो देशके पुनर्निर्माण और सच्चे स्वराज्यकी स्थापनाके लिअे जरूरी हैं।

पाठक पूछेंगे कि वे कार्य कौनसे हैं? जगतकी शांति और मानवकी आत्माका विकास अुन कार्योंकी नींव है। अुसका अुपाय सत्य और अहिंसात्मक होना चाहिये। अेक तरहसे कहें तो ये काम अैसे हैं, जिन्हें सब कोअी जानते हैं। अुस अुस समय गांधीजीने ये कार्य हमारे सामने रखे थे। फिर भी अुनमें नवीनता है और वह यह कि आजके जड़मूलसे बदले हुअे स्वतंत्रताके युगमें वे कार्य अेक अलग ही स्वरूप और भाव ग्रहण करते हैं। अुनसे संबंध रखनेवाली दलीलों और अुनके प्रयोजनोंकी नये रूपमें और नये संयोगोंमें फिरसे जांच की जानी चाहिये। अुनमें सुधार करने, घटाने-बढ़ाने या नये सिरेसे कुछ जोड़नेकी भी जरूरत हो सकती है। फिर भी थोड़ेमें अुनका सार यह है कि गांधीजीने हमें जो बातें सिखाअी हैं, अुन्हें अब हमें अपने विचारबलसे अपनाकर खुद ही — गांधीजीने कही हैं अिसलिअे नहीं, बल्कि अिसलिअे कि हम अुनकी जरूरत आज महसूस करते हैं — कारगर बनाना होगा। 'हरिजन' पत्र आज नये युगमें अूपरके काम करनेके लिअे ही चलते हैं। अिसी कारणसे नवजीवन ट्रस्ट घाटा अुठाकर भी अुन्हें चला रहा है। हालांकि घाटा अुठानेकी भी अेक हद तो होती ही है।

यह घाटेकी बात आअी तो मुझे यहां अितना और कह देना चाहिये कि तीनों 'हरिजन' पत्र मिलकर भी आज अपना पूरा खर्च नहीं निकाल पाते। अुनके ग्राहक घटते जाते हैं। लेकिन यहां अुसकी तफसीलमें मैं नहीं जाअूंगा। मैं मानता हूं कि समय आने पर व्यवस्थापक अुसकी विस्तृत चर्चा करेंगे।

अूपरकी बात तो मैंने पत्र-लेखककी शिकायतके संबंधमें कही है। अब मैं अुनके पत्रकी मुख्य बातों पर आता हूं। मेरे मनमें प्रश्न अुठता है कि अुन्होंने अपना पत्र अंग्रेजीमें क्यों लिखा? वे गुजरातीमें लिख सकते हैं। अैसा करके वे अपने विचार ज्यादा अच्छे ढंगसे प्रकट कर सकते थे। अुन्होंने अूपरकी शिकायतके अलावा अेक-दो और भी विचार अपने पत्रमें बताये हैं। वे भूमि-दानके बारेमें लिखते हुअे कहते हैं कि वस्तुतः भूमिदानकी बात अुन्हें पसन्द है। लेकिन अुनकी आपत्ति यह है कि सारे भूमिदाता शुद्ध बुद्धि और शुद्ध भावसे जमीन नहीं देते। अिसके अलावा, अुन्हें जितनी श्रद्धा श्री विनोबामें है, अुतनी भूमिदानका काम करने-वाले निचले स्तरके सेवकोंमें नहीं है। अिसलिअे वे कहते हैं कि जमीनका बंटवारा करनेके लिअे विनोबा तो हर जगह नहीं पहुंच सकेंगे, तब फिर अिस महत्त्वके कामका आखिर क्या होगा? और समग्र रूपमें अुनकी बड़ी शिकायत यह है कि ग्राम-जीवनका सच्चा अध्ययन किसीने भी नहीं किया है; अुसके बिना भूदानसे या और किसी आन्दोलनसे कुछ लाभ होनेवाला नहीं है।

भूमिदानके संबंधमें अूपरकी शिकायत या शंका वैसी ही है, जैसी कि मीराबहन और दूसरे कुछ लोगोंने अुठाअी थी। अुनकी चर्चा मैं अिस पत्रमें पहले कर चुका हूं। अिसलिअे फिर अुसे यहां नहीं दोहराना चाहता। यह तो स्पष्ट है कि सब कार्यकर्ता श्री विनोबाके जैसे नहीं हो सकते। हमारी स्वराज्यकी लड़ाअीके दिनोंमें भी अैसा कहा जाता था कि सब लोग गांधीजी जैसे नहीं हैं; नीचेके सारे सेवकोंसे सत्याग्रह नहीं चल सकता। फिर भी हमने देखा कि काम करनेकी अेक सामुदायिक रीति होती है और अुस रीतिसे समाजके काम होते आये हैं। प्राचीन कालमें सभी राम, कृष्ण या बुद्ध नहीं थे; फिर भी काम तो होता ही था। पढ़े-लिखे लोगोंमें अेक अति व्यक्तिवादी दृष्टि निर्माण हो जाती है, जिससे अुनमें बालकी खाल निकालनेकी आदत पड़ी हुअी देखनेमें आती है। यही चीज अिन भाअीके पत्रमें भी देखनेको मिलती है। अुनकी मुख्य बात तो यह है कि समग्र ग्राम-जीवनका अभ्यास हमारे यहां किसीको नहीं है। यहां मैं अुन्हींके कुछ शब्द अुद्धृत करता हूं:

"समाज-शास्त्र और मानव-विद्याके विद्यार्थीके नाते मेरा निश्चित मत है कि पं० नेहरू सहित सारे राजनीतिज्ञों और श्री विनोबाके साथ सारे समाजसेवकोंको हमारे ग्रामजीवनका सच्चा और परिपूर्ण खयाल ही नहीं है। अुनके विचार अुनकी

www.vinoba.in

राष्ट्रवादी मान्यताओं और मनपसंद कल्पित विचार-दृष्टि पर खड़े हैं। . . . यह सब ठीक नहीं है। अर्थशास्त्र जो थोड़ी-बहुत बातें सिखाता है, अुससे ज्यादा भूदानके अूपरी या निचले स्तरके कार्यकर्ता भी कुछ नहीं जानते।"

श्री विनोबा या श्री जवाहरलालजीको ग्रामजीवनका खयाल नहीं है, यह कहनेकी धृष्टता केवल किताबी विद्वत्ताके बल पर ही कोअी कर सकता है। देशके अिन दो आजीवन सेवकोंने अपने विचार और दृष्टि अर्थशास्त्र पढ़कर नहीं प्राप्त किये, बल्कि देशकी जनताकी सेवा करते-करते प्रत्यक्ष अनुभवसे अुन्हें प्राप्त किया है। ये भाअी अपने किताबी अध्ययनके बल पर जो कुछ जानने-समझनेका दावा करते हैं, अुसकी सच्ची कसौटी और कीमत तो अुस ज्ञानका अुपयोग करनेमें है। यदि वे अपने अिस ज्ञानका अुपयोग प्रत्यक्ष कार्यके जरिये भूमिदान प्रवृत्तिमें करें, या अपने मनपसंद किसी दूसरे सेवाकार्यमें करें, तो अुन्हें मालूम होगा कि सच्चा ग्राम-जीवन क्या है और अुसके प्रश्न हल करनेके लिअे क्या क्या किया जाना चाहिये। अैसा देखनेमें आता है कि केवल अमुक विषयको पढ़ लेनेसे पढ़नेवालेके मनमें शास्त्रीय ज्ञानका सन्तोष-सा अनुभव होने लगता है। हमारे शिक्षित नवयुवकोंको अिस कमजोरीसे बचना चाहिये। अिसका अुपाय यही है कि वे अपनी विद्याको प्रत्यक्ष कार्यकी कसौटी पर कसें। पढ़नेके बाद गुननेकी आवश्यकता रहती है। यह याद रखना चाहिये कि अुस आवश्यकताकी पूर्ति जीवनके विश्वविद्यालयमें प्रत्यक्ष कार्य द्वारा अध्ययन करनेसे ही होती है।

२८-८-'५३ मगनभाअी देसाअी
(गुजरातीसे)

टिप्पणियां

बीड़ीका व्यसन और आरोग्य

अुपर्युक्त शीर्षकसे श्री क्षितीन्द्रकुमार नागके अंग्रेजी लेखका गुजराती अनुवाद ता० २०-६-'५३ के 'हरिजनबंधु' में प्रकाशित हुआ है।*

विषय अत्यन्त अुपयोगी है; तम्बाकूके समग्र अुपयोगको ध्यानमें रखकर अुसकी बारीकीसे जांच होनी चाहिये। सूंघने, खाने और पीनेमें तम्बाकूका अुपयोग लगभग सार्वत्रिक जैसा बन गया है। चिलम, पाअिप और हुक्के आदिसे तम्बाकू पीनेवाले तम्बाकूके नुकसानसे कितने अंशों तक बचते हैं? और काम करते हुअे बीच-बीचमें आराम लेनेके लिअे श्रमजीवी वर्ग यदि तम्बाकूका 'मजा' न ले तो क्या करे? ये और अिस तरहके दूसरे सवाल सोचने जैसे हैं।

"तम्बाकू पीनेके आदी बने हुअे लोगोंका तम्बाकू छोड़ते ही वजन बढ़ने लगता है", डॉ० नाग द्वारा अपने समर्थनमें दिये हुअे अिस अुद्धरणकी पुष्टि अभी-अभी दो-तीन महीने पहले ही घटी हुअी नीचेकी घटनासे होती है:

राजस्थानके पाली जिलेके सुमेरपुर कस्बेके करीब पैंसठ वर्षके अेक व्यापारी भाअीने, जो बचपनसे बीड़ीके बड़े व्यसनी थे, अेक लड़केको बीड़ी पीते हुअे रोका। अिस व्यापारीके सुपुत्रने, जो बड़े भले स्वभावके नीतिभीरु, निर्व्यसनी और सज्जन व्यक्ति हैं, प्राकृतिक चिकित्सामें भी विश्वास रखते हैं और जिनका करीब बयालीस वर्षका जीवन बिना किसी दवा-दारूके सुख और आरामसे बीता है, बड़ी नम्रतासे अपने पिताको कहा कि यह लड़का थोड़ा अच्छा मालूम होता है; कोअी दूसरा होता तो आपसे अुलटा सवाल करता कि आप क्यों पीते हैं? पुत्रकी यह सांकेतिक बात सचोट साबित हुअी। अुसी क्षणसे अुस बूढ़े व्यापारीने बीड़ी पीना छोड़ दिया। कुछ दिन तो अुन्हें थोड़ा मुश्किल मालूम हुआ। लेकिन बीड़ी छूटते ही अुनके शरीरमें परिवर्तन होने लगा। जठराग्नि सतेज हो गअी। लगभग बीस वर्षसे अुनका वजन करीब ११०-१११ पौंड ही रहता था, वह अब बढ़कर १२१-१२२ पौंड हो गया। अिससे अुन्हें अपार आनन्द और आश्चर्य होता है।

यह अिस बातका भी अुदाहरण है कि मजबूत मन वर्षोंकी बुराअीको क्षणभरमें मिटा सकता है।

(गुजरातीसे) गोकुलभाअी भट्ट

दृष्टिदान

श्री सम्पादक, हरिजन

लंदनके अेक अखबार 'डेली स्केच' का समाचार है कि अेक ६७ वर्षके बूढ़े अंग्रेज सज्जन ४५ वर्ष तक अंधे रहनेके बाद फिर देखने लगे हैं। ४५ वर्षके बाद जब अुन्हें अचानक फिर दृष्टि प्राप्त हुअी, तो वे भगवानको धन्यवाद देते हुअे बार-बार यही कहते रहे कि 'हे भगवान्, मैं कितना खुश हूं।' अब वे बहुत साफ देख सकते हैं। अुनकी अिस दृष्टि-प्राप्तिका श्रेय लंदनके रायल हास्पिटलके आंखके डाक्टरों और अुस दयालु महिलाको है जिसने अपनी अेक आंख अिस वृद्धकी सहायताके लिअे दान करनेकी वीरता और अुदारता दिखायी। आंखके सर्जनने बहुत होशियारीके साथ अुसकी सहमतिसे अुसकी अेक आंखका 'कार्निया' (चक्षुपटल) आंखसे अलग करके अंधेकी बायीं आंखमें जोड़ दिया। अिस ऑपरेशनकी खूबी यह है कि आंखके अुक्त हिस्सेको जीवितावस्थामें ही निकाला और जोड़ दिया जाता है। आपरेशनके बाद कुछ सप्ताहों तक वृद्धकी यह आंख पट्टीसे बंधी रही। फिर अेक दिन पट्टी खोली गअी और ४५ वर्ष तक अंधे रहनेवाले अिस व्यक्तिने डॉक्टरों और परिचारिकाओंको देखा। अुसका यह अनुभव बहुत ही रोमांचपूर्ण था। हमारे देशके हजारों अंधोंको भी अिस घटनासे आशाका संदेश मिलता है — अैसे ऑपरेशनोंके जरिये अुन्हें दृष्टिदान दिया जा सकता है। बम्बअीमें परेलके किंग अेडवर्ड मेमोरियल अस्पतालमें आंखके डाक्टर जीवित आंखसे कार्निया निकालकर अुसे अंधी आंखमें जोड़नेका यह ऑपरेशन करते हैं। भारतके दूसरे शहरोंमें भी आंखके अैसे अस्पताल अवश्य होंगे जहां अंधोंको अुनकी खोयी हुअी दृष्टि अिस तरह फिर वापस दी जा सकती है। अच्छी स्वस्थ आंखोंवाली स्त्रियों और पुरुषोंको अपनी विलमें यह बात भी दाखिल करवाना चाहिये कि जब अुनकी मृत्यु हो तो अुनके रिश्तेदार तुरन्त आंखके डाक्टरको बुलाकर अुनकी मृत देहसे अुनकी आंखें निकलवा लें और अुन्हें अुपर्युक्त अुद्देश्यके लिअे दान कर दें।

५८, वुडहाअुस रोड, सोराबजी मिस्त्री
कोलाबा, बंबअी–५
(अंग्रेजीसे)

कृत्रिम खाद

कुछ माह पहले अेक दक्षिण भारतीय पाठकने मुझे अेक पत्र लिखा था, जिसमें अुन्होंने बताया था कि चावलकी खेतीकी जापानी पद्धतिमें कृत्रिम खादका अुपयोग करनेकी जरूरत होती है और अिस कारण जमीनके अुपजाअूपनकी दृष्टिसे वह लम्बी अवधिमें नुकसानदेह साबित होगी। अुन्होंने मेरा ध्यान अिस विषय पर 'हरिजन' में पहले जो लेख प्रकाशित हो चुके हैं, अुनकी ओर खींचा। अुनका संकेत स्पष्ट था। वे चाहते थे कि मैं अिस विषयकी चर्चा दुबारा करूं। मैंने अुनका यह पत्र बम्बअी प्रान्तमें जापानी पद्धतिसे चावलकी खेतीका प्रयोग करनेवाले अेक केन्द्रको भेज दिया। केन्द्रकी ओरसे जो जवाब आया है, वह न तो संतोषप्रद

* यह लेख 'हरिजनसेवक' में ता० १८-४-'५३ के अंकमें 'तन्दुरुस्ती पर तम्बाकू पीनेका असर' शीर्षकसे छपा है।

www.vinoba.in

है और न अुचित निर्णय पर पहुंचनेमें किसी तरहकी मदद ही करता है। बादमें प्रसंगवश अिसी संबंधका अेक और समाचार मेरे पढ़नेमें आया, जो अेक दूसरे पाठक-मित्रने भेजा था:—

कोअिम्बटूर, २७ अप्रैल

"सुना जाता है कि धानकी खेतीकी जापानी पद्धति हमारी परिस्थितियोंके लिअे पूरी तरह अनुकूल नहीं है। बताया गया है कि यह बात अी० सी० अे० अेफ० अी० के अन्न और खेती संघटनके चावल-सलाहकार डॉ० रामैयाको मद्रासके खेती-विभागके कर्मचारियोंने कही है।

"डॉ० रामैयाको भारत-सरकारने देशके विभिन्न प्रान्तोंमें चावलकी खेतीकी जापानी पद्धतिके प्रयोगकी गति-विधिकी जांच करने और अुस पर अपनी रिपोर्ट पेश करनेके लिअे कहा था।

"कर्मचारियोंका कहना है कि जापानी पद्धतिके प्रयोगमें बड़ी मात्रामें अेमोनियम सल्फेटका अुपयोग करनेकी जरूरत होती है और अिसलिअे वह हमारे देशकी परिस्थितियोंके अनुकूल नहीं है।

"अतः जापानी पद्धतिमें कुछ फर्क किया जा रहा है। अेमोनियम सल्फेट या नाअिट्रोजन कम मात्रामें लिया जाता है और अुसे कम्पोस्ट या हरी खादमें मिला दिया जाता है। यह नयी पद्धति गोदावरी, कृष्णा और कावेरीके डेल्टा-क्षेत्रके चावल पैदा करनेवाले लगभग ३००० गांवोंमें प्रदर्शित की जायगी। अिस पद्धतिके प्रयोगके लिअे शुरूमें चावलकी अुन किस्मोंको चुना जायगा जिनकी फसल जल्दी आ जाती है।" (टाअिम्स आफ अिन्डिया न्यूज़ सर्विस)

विशेषज्ञ न होनेके कारण मैं अिस प्रश्न पर निश्चित राय नहीं दे सकता। पर कृत्रिम खादके अुपयोगके बारेमें सामान्यतः अेक बात मैं जरूर कहूंगा। अगर जापानी पद्धतिमें कृत्रिम रासायनिक खादोंकी जरूरत अनिवार्य हो, तो यह अिस पद्धतिका अेक बड़ा दोष है और हमें अुसके खिलाफ समय रहते चेत जाना चाहिये। अिन कृत्रिम खादोंके बुरे नतीजोंके विषयमें आजकल अनेक वैज्ञानिकोंकी यही राय है कि यह वस्तु निर्दोष नहीं है। और जमीनकी परख रखनेवाले वैज्ञानिक आधुनिक जगतको अुनके खिलाफ चेतावनी दे रहे हैं।

२-७-'५३ म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

मध्यप्रदेशकी राजभाषायें

नीचेकी खबर मध्यप्रदेश सरकार द्वारा निकाली गयी अेक प्रेस विज्ञप्तिमें से दी जा रही है:

"कुछ अपवादोंको छोड़कर राज्यके सारे कामकाजके लिअे हिन्दी और मराठी मध्यप्रदेशकी राजभाषायें घोषित की गअी हैं। यह बिलकुल सच है कि जब हम अेक भाषाकी जगह किसी दूसरी भाषाको देते हैं, तब अनेक कठिनाअियां पैदा होती हैं। लेकिन यह निश्चित है कि हम अिसी कारणसे अिस परिवर्तनको अनिश्चित कालके लिअे स्थगित नहीं रख सकते। अिसलिअे यह जरूरी है कि हम अिन कठिनाअियोंको दूर करें और अपना सारा सरकारी कामकाज अपनी भाषाओंमें करना शुरू करें। अिस विज्ञप्ति पर **पहली सितम्बरसे** अमल किया जायगा। वह कामकाजके कुछ अैसे वर्गोंको अिस अमलका **अपवाद मानती है,** जिनमें कानूनी या कुछ समयके लिअे दूर न की जा सकनेवाली शासन-संबंधी कठिनाअियां हैं। अिन कामोंके लिअे फिलहाल अंग्रेजीका अुपयोग किया जा सकता है। लेकिन सरकार अपने अधिकारियोंसे यह आशा रखती है कि वे अिन कामोंमें भी यथासंभव राजभाषाओंका ही अुपयोग करेंगे, सिवाय अैसे कामकाजके जो विज्ञप्तिके अनुसार अंग्रेजीमें ही होना चाहिये।

"फिर भी यह साफ कर दिया जाना चाहिये कि २६ जनवरी, १९५४ के बाद सारा सरकारी कामकाज जहां तक हो सकेगा राजभाषाओंमें ही किया जायगा, सिवाय अुन विषयोंके जिनमें कानूनके अनुसार या संविधानके आदेशानुसार केवल अंग्रेजीमें ही काम होना चाहिये।

"सरकार चाहती है कि जिस भाषाका अुपयोग किया जाय वह यथासंभव सीधी-सादी और आसानीसे समझने लायक होनी चाहिये। कानूनी, पारिभाषिक और अैसे दूसरे शब्दोंको छोड़कर, जिनके गलत प्रयोगसे गड़बड़ी या गलतफहमी होनेकी संभावना हो, अैसे प्रचलित शब्दोंका ही अुपयोग किया जाना चाहिये, जिन्हें आम लोग आसानीसे समझ लेते हैं। अगर किसी अंग्रेजी शब्द या मुहावरेका हिन्दी या मराठी पर्याय तुरन्त न मिल सके, तो कुछ समयके लिअे अुस अंग्रेजी शब्द या मुहावरेका प्रयोग करनेमें कोअी हर्ज नहीं।"

८-९-'५३ म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

भूमिदान

(१)

कौन टोकता है शंकासे? चुप रह, चुप, अपलापी।
क्रियाहीन चिन्तनके अनुचर! केवल ज्ञान-प्रलापी।
नहीं देखता, ज्योति जगतमें नूतन अुभर रही है?
गांधीकी चोटीसे आगे गंगा अुतर रही है।
अंधकार फट गया, विनोबामें धरकर आकार,
घूम-घूम वेदना देशकी घर-घर रही पुकार।

(२)

ओ सिकतामें चंचु गाड़कर सुखसे सोनेवालो!
चिन्ताअें सब डाल भाग्य पर निर्भय होनेवालो!
पहुंच गअी है घड़ी, फैसला अब करना ही होगा,
दो में किसी राह पर पगले! पग धरना ही होगा।
गांधीकी लो शरण, बदल डालो मिलकर संसार।
या फिर रहो कल्किके हाथों कटनेको तैयार।

(३)

अपनेको ही नहीं देख टुक, ध्यान अिधर भी देना,
भूमिहीन कृषकोंकी कितनी बड़ी खड़ी है सेना।
बांध तोड़ जिस रोज फौज खुलकर हल्ला बोलेगी,
तुम दोगे क्या चीज? वही चाहेगी जो सो लेगी।
कृष्ण दूत बनकर आया है, चरण गहो सम्राट,
मच जायगा प्रलय, कहीं वामन हो पड़ा विराट।

(४)

पहचानो, यह कौन द्वार पर अधनंगा आया है?
किस कारण अधिकार स्वयं बन भिखमंगा आया है?
समझ सको यदि मर्म, बुलाये विना दौड़कर आओ,
जो समझो तुम अंश अपरका अुसे स्वयं दे जाओ।
स्वत्व छीनकर क्रांति छोड़ती कठिनाअीसे प्राण,
बड़ी कृपा अुसकी, भारतमें मांग रही वह दान।

रामधारीसिंह 'दिनकर'

भूदान-यज्ञ
विनोबा भावे
कीमत १–४–० डाकखर्च ०–६–०
नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–९

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१९ सितम्बर १९५३

अेक गलतीके खिलाफ दूसरी गलती

सूरत जिलेके पारडी तालुकेमें प्रजा-समाजवादी पार्टीकी ओरसे अेक आन्दोलन शुरू किया गया है। सरकारकी ओरसे अुसमें कुछ लोगोंको पकड़ लिया गया है और सारे तालुकेमें १४४ धारा लागू कर दी गअी है।

पारडीके अिस आन्दोलनका संबंध भूमिदान-आन्दोलनसे है। तथा अुसके नेता अपने अिस आन्दोलनको 'खेड़ सत्याग्रह' नामसे पुकारते हैं। अिसलिअे अुसके विषयमें विचार करना चाहिये।

बम्बअी राज्यके काश्तकारी कानूनकी वजहसे खातेदारों या जमीन-मालिकोंमें अेक अैसी प्रवृत्ति पैदा हो गअी कि काश्तकारी कानूनके कारण सुरक्षित बने हुअे काश्तकारोंसे जितनी बने अुतनी साझे या लगान पर दी हुअी जमीन खुद खेती करनेके लिअे वापिस ले ली जाय। कानूनमें अैसा करनेकी गुंजाअिश होनेसे जमीन-मालिकोंने अुसका लाभ अुठाना शुरू किया। कहा जाता है कि अिस तरीकेसे पारडी तालुकेमें काफी जमीन असामियोंके पाससे जमीन-मालिकोंके हाथमें चली गअी।

दूसरी बात यह हुअी बताअी जाती है कि जमीन-मालिकोंने अिस तरह वापिस पाअी हुअी जमीन पर अनाजकी खेती कम करके या बन्द करके घास अुगाना शुरू किया। अुसमें भी अुन्हें मुनाफा तो होता ही है। अिसके अलावा, वे दो तरहसे विशेष निश्चिन्त रहते हैं: (१) घास पैदा करनेमें कुछ खास अुत्पादन-खर्च नहीं करना पड़ता; (२) मजदूरोंकी गरज कम हो गअी है। कुल मिलाकर अिसमें जमीन-मालिकोंको सफलता मिली और किसानोंका धंधा छिन गया।

अनाजकी पैदावार कम करके जमीनमें घास पैदा करना काश्तकारी कानून या सरकारकी जमीन-संबंधी आजकी नीतिके अनुसार सही है या गलत, यह अेक सवाल है। अिस संबंधमें सरकारको खातेदारोंसे जवाब तलब करना चाहिये।

घास भी ढोरोंके कामकी चीज तो मानी जायगी। लेकिन अनाजकी तंगीके वक्त अनाज पैदा करनेवाली जमीनमें अनाजके बदले घास पैदा करना ठीक नहीं माना जा सकता। फिर भी बताया जाता है कि पारडीके खातेदारोंका पिछले कुछ बरसोंसे अिसी तरहका रवैया रहा है। यह स्पष्ट है कि अिसके फलस्वरूप किसानोंमें बेकारीके प्रश्नने अुग्र रूप धारण कर लिया। अिसे कैसे हल किया जाय, यह सरकार और जनता दोनोंके लिअे चिन्ताका विषय बन गया।

अैसी स्थितिमें प्रजा-समाजवादी पार्टीने 'खेड़ सत्याग्रह' नामसे अेक आन्दोलन शुरू किया। तेलंगानामें भूमिहीनोंकी अैसी हालत देखकर श्री विनोबाने भूमिदान-यज्ञका सीधा और शांतिपूर्ण हल सुझाया था। समस्याका यह हल लोगोंको पसन्द आया और आज अिस तरीकेसे देशव्यापी आन्दोलन शुरू हो गया है। यह तरीका पारडीमें भी आजमाया जा सकता है। प्रजा-समाजवादी पार्टीके नेता श्री जयप्रकाशनारायण हालमें ही पारडी तालुकेमें और सारे गुजरातमें भूमिदान-आन्दोलनको वेग देनेके लिअे आये थे। अुन्होंने यह कहा कि अिस नीतिको जोरोंसे आगे बढ़ाना चाहिये; अिस रास्ते चलकर हम अेक बड़ा सवाल शांतिसे हल करके देशमें बहुत बड़ी क्रान्ति कर सकेंगे। यह तो साफ है कि पारडीका 'खेड़ सत्याग्रह' आन्दोलन भूमिदानकी अिस नीति पर नहीं खड़ा है। अुसके नेता भी यह बात स्वीकार करते हैं। अुनका यह दावा है कि यह आन्दोलन अुससे आगे बढ़ा हुआ सत्याग्रह है। अिसका अर्थ यह है कि अुन्हें भूमिदान-यज्ञ निष्फल मालूम हुआ।

अिसके अलावा, सत्याग्रहका पहला सिद्धान्त यह है कि किस बातके लिअे सत्याग्रह किया जाय और किसके खिलाफ वह किया जाय, अिन दोनोंकी स्पष्टता होनी चाहिये। और ये दोनों चीजें लोगोंकी निगाहमें अुचित होनी चाहिये; या अुनका औचित्य समझानेके लिअे लोगोंको शिक्षा देनी चाहिये। अैसा करनेके बाद यदि नरम वैधानिक तरीकोंसे काम लेने पर सवाल हल न हो, तो शांतिके अमली अुपायका आसरा लिया जा सकता है। अिस दृष्टिसे पारडीके आन्दोलनको देखनेसे क्या मालूम होता है?

अैसा कहा जाता है कि अभी तुरन्त ५००० अेकड़ जमीन घासकी खेतीसे निकालकर किसानोंको दी जानी चाहिये। अुसके लिअे जोरदार भूमिदान-आन्दोलन खड़ा करनेके बजाय किसानोंमें अैसा प्रचार किया गया कि तुम सब मिलकर घासकी जमीन पर जाओ और अुसे जोतने लगो। यानी जमीनका कब्जा लेकर अुस पर खेतीका काम शुरू कर दो। मौसम, वक्त और साधन वगैराको देखते हुअे अिस समय जमीन जोतनेसे तात्कालिक कोअी फसल मिल सकती है या नहीं, यह अेक अलग सवाल है। लेकिन यह कदम खातेदारोंके खिलाफ माना जायगा। और वह अिस तरह कि भूमिहीन लोगोंकी टोलियां जमीन पर कब्जा करनेके लिअे दौड़ पड़ें, जिससे खातेदारों पर अैसा दबाव पड़े कि वे जमीन दे दें या छोड़ दें। अथवा अिसके पीछे आन्दोलनकारियोंकी यह धारणा रही हो कि अिस प्रकार लोगोंकी भावनाको अुत्तेजित करनेवाला जोरदार प्रदर्शन किया जाय, तो सरकार पर अुसका असर पड़ेगा और वह कानूनके बल पर काश्तकारोंको जमीन दिला देगी। यदि अिस तरहकी कुछ भोली समझ या अनुमानसे पारडी-आन्दोलन शुरू किया गया हो, तो यह साफ है कि वह भूमिदान-यज्ञके सिद्धान्तोंसे भिन्न नीति पर खड़ा माना जायगा। साथ ही यह भी कहना होगा कि अुसमें सच्चे सत्याग्रहकी मुख्य शर्तें पूरी नहीं होतीं। वह आन्दोलन सीधा खातेदारोंके खिलाफ नहीं कहा जा सकता और फिर भी वह अुन्हें छूता है; अिसी तरह वह सीधा सरकारके खिलाफ भी नहीं शुरू किया गया, यद्यपि सरकारको भी वह छूता अवश्य है। खातेदारोंकी जमीनमें प्रवेश करनेसे कानूनका भंग होता है, लेकिन यह कहना कठिन है कि वह सविनय कानून-भंग है। अिस कारण सारा आन्दोलन प्रदर्शन करनेकी अेक हलचल जैसा बन गया है। सत्याग्रह अिससे कहीं गंभीर चीज है। अिसलिअे पारडी-आन्दोलनको सही मानोंमें सत्याग्रह नहीं कहा जा सकता।

दूसरे, आज यह विवादका विषय नहीं रहा कि भूमिहीनोंको भूमि मिलनी चाहिये। सरकार भी अैसा चाहती है; लोग भी भूमिदानको पसन्द करते हैं। अैसी हालतमें कौनसे सत्यको सिद्ध करनेके लिअे आग्रह किया जाता है? यह कहा जाता है कि काश्तकारोंकी जमीन गलत तरीकोंसे छीन ली गअी है, जिसकी जांच होनी चाहिये। खेड़ सत्याग्रहके पीछे जो मांग है, अुसका विचार करनेसे तो अुलटी अुलझन बढ़ती है, घटती नहीं। अैसी जांच जरूरी मालूम हो तो अुसके लिअे व्यवस्थित मांगका आन्दोलन खड़ा करना चाहिये। धारासभाका आसरा लिया जा सकता है। यदि अैसा लगे कि खातेदारोंने जमीनों पर गैरकानूनी ढंगसे कब्जा कर लिया है, तो अदालतोंका आसरा भी लिया जा सकता है। अथवा अन्तमें जिन किसानोंको खातेदारोंकी कार्रवाअीका शिकार बनना पड़ा हो, वे अपना कब्जा न छोड़ें और सत्याग्रह

www.vinoba.in

कर सकते हैं। लेकिन पारडी-आन्दोलनमें अैसा कुछ हुआ मालूम नहीं पड़ता। समाजवादी पार्टीके कार्यकर्ता भूमिदान प्रवृत्तिमें जुड़कर काम करते थे, अुसके बदले अुन्होंने यह नीति क्यों अख्तियार की, अुसमें सत्याग्रह कहां आता है और अुससे क्या लाभ होगा, यह समझमें नहीं आता।

जनताको अब यह देखना है कि बेकार किसानोंको अिस तरहके गलत आन्दोलनमें पड़नेसे कोअी नुकसान न हो। अुतावलीमें या पूरे विचारके बिना किये जानेवाले सत्याग्रहसे नुकसान होता है; अिस नुकसानसे अुन्हें बचाना चाहिये। काश्तकारी कानूनमें रही किसी खामीका अगर दुरुपयोग किया जाता है, तो सरकारको अुसे दूर करना चाहिये। खातेदारोंको भी यह समझ लेना चाहिये कि श्री विनोबाकी शांत प्रवृत्तिकी अुपेक्षा करना अब अुन्हें पुसायेगा नहीं। अगर अुन्होंने अपनी जमीनमें अनाजकी खेती करना बन्द कर दिया हो तो यह अनुचित है। बरसोंसे अपने साथ रहे काश्तकारोंका अिस तरह धंधा छीन लेनेसे अन्तमें अुन्हें भी नुकसान ही होगा। वे अपनी जमीनको अिस तरह पड़ती—जैसी नहीं बना सकते। यदि अैसा करें तो जमीन पर अुनका मालिकी हक भी क्यों रहना चाहिये? वे अपने अिस हकका अुपयोग जब तक समाजके हितमें करें, तभी तक वे अिसका अुपभोग कर सकते हैं। सबके सुखमें अुनका सच्चा सुख समाया हुआ है, यह अटल सामाजिक न्याय है। अिसे यदि भुला दिया जाय, तो पारडीके जैसे आन्दोलनोंको बिना कारण मौका मिल जाता है और अिस तरह अेक गलतीके खिलाफ दूसरी गलती होती है। लेकिन अिससे गलती दुगनी ही होती है; पहली गलती सुधरती नहीं। दोनों गलतियां दूर हों और शांति तथा समझदारीका रास्ता लिया जाय, यही सच्ची नीति है। अिसी नीतिकी तरफ खातेदारों और काश्तकारोंको मोड़नेमें लोकहित निहित है।

११-९-'५३ **मगनभाअी देसाअी**

(गुजरातीसे)

आत्म-लोकवासी किशोरलालभाअी

पूज्य किशोरलालभाअी आत्म-लोकवासी हुअे, अुस घटनाको अब अेक साल हो रहा है। जैसा मैंने अुस प्रसंगमें कहा था, हमारे बंधन-रहित बंधु-मंडलमें वे स्नेहनका कार्य करते थे। अपने अगाध स्नेहकी वर्षा हम पर करके वे निज-लोक सिधारे।

अुनके जानेके बाद बंधु-जनोंने अपनी जिम्मेवारीका विशेष अनुभव किया। चांडिलमें अिकट्ठे हुअे बहुत सारे भाअी-बहनोंको सूक्ष्म भावमें अुनकी अुपस्थितिका अनुभव हुआ। वहां लोगोंने अेक बड़ी बात तय की। 'चरखा-संघ' सर्व-सेवा-संघमें विलीन हुआ, जिससे सर्वोदय-समाजकी शक्ति बढ़ी। अब रचनात्मक काम करनेवाले दूसरे संघोंके लिअे भी रास्ता खुल गया है। मेरा विश्वास है कि वे भी काल-क्रमेण विलीन होनेका मार्ग शोधेंगे। अहिंसा टुकड़ोंमें काम नहीं करती है। वह तो अखंड, अेकरस है। वेदोंने अुसे ही "अदिति" नाम दिया है।

किशोरलालभाअीके स्मारकके लिअे पैसा अिकट्ठा करनेकी कल्पना कुछ मित्रोंने की थी। मैंने यह कल्पना पसंद नहीं की। मैंने कहा, गांधीजीके नामसे हमने निधि अिकट्ठी की, वह बात भी किशोरलालभाअीको बहुत रुची नहीं थी। मुझे भी वह नहीं जंची थी। लेकिन हमारे बुजुर्ग नेताओंने निधिके लिअे वैसी जाहिर घोषणा की, तो हमने भिन्न आवाज अुठाना ठीक नहीं समझा। पर अब हम पैसा अिकट्ठा करनेका अध्याय वहीं समाप्त समझें, तो नये अध्याय लिखनेके लिअे स्फूर्ति मिलेगी। सार्वजनिक अुपयोगके खयालसे ही क्यों न हो, परिग्रह-वृत्तिको हम बढ़ावा न दें, तो हमारे लिअे पराक्रमकी नअी राह खुल जायगी और हमारे कार्यकर्ता तेजस्वी और प्रतिभावान् बनेंगे।

लोगोंको मालूम है कि भूदान-यज्ञकी पूर्तिमें हमने संपत्ति-दान-यज्ञ चलाया है। लेकिन अुसमें हम पैसेके संग्रहसे मुक्त रहते हैं। पैसा दाताके पास रहता है, दान-पत्र हमारे पास रहता है। दाताको हमारे निर्देशके अनुसार खर्च करना होता है। अुसका हिसाब भी अुसको रखना होता है। वह हिसाब समाजके सामने वह पेश करता है। अेक-मुश्त दान देकर वह मुक्त नहीं हो जाता, बल्कि आजीवन अपनी संपत्तिका अेक निश्चित हिस्सा देता है। यह कल्पना अगर हम देशभरमें प्रचारित कर सकें, तो घर-घरमें गरीबोंके कामके लिअे बैंक खुल जायगी और अपरिग्रहकी ताकत परिग्रहसे लाख गुना अधिक है, अिसका हमें दर्शन होगा। मैं जान-बूझकर यह काम आहिस्ता-आहिस्ता कर रहा हूं, क्योंकि अिसमें अेक जीवन-निष्ठा बनानेकी बात है। वैसे संपत्तिदान-यज्ञकी जरूरत जबसे भूदान-यज्ञ चला, तभीसे महसूस हो रही थी। पर मैंने 'अेकै साधे सब सधे' कबीरके अिस वचनके अनुसार आरम्भमें भूदान-यज्ञ पर ही जोर देना पसन्द किया। अुसमें कुछ प्रगति होनेके बाद बिहारमें संपत्ति-दानका अपरिग्रही विचार लोगोंके सामने रखा। अुसमें श्री किशोरलालभाअीकी स्मृति मुझे चेतना दे रही थी।

चांडिलमें सर्वोदय-प्रेमी सुहृद्-जनोंने महसूस किया कि भूदान-यज्ञको सफल करना है तो "तीरे अूभा जुअे तमाशो" वाली बात अब नहीं चलेगी, अुसमें सबको कूद पड़ना ही होगा। और तबसे भूदान-यज्ञका जोश कुछ बढ़ा। अिसमें भी किशोरलालभाअीकी स्मृति काम कर रही है, अैसा मैं देखता हूं। जब वे जीवित थे, कहते थे: "अगर मेरा शरीर लायक होता, तो मैं भूदान-यात्रामें गांव-गांव घूमता।" वे शरीरसे तो नहीं घूमते थे, लेकिन दूसरे जो घूमते थे, अुनका मन और प्राणसे साथ देते थे और मातृ-स्नेहसे बचाव कर लेते थे। अुनके आशीर्वादसे भूदान-यज्ञ आगे बढ़ रहा है और अहिंसामें विश्वास रखनेवाले भाअी-बहनोंको नवीन आशा दे रहा है।

किशोरलालभाअी स्थूल स्मारकोंमें मानते नहीं थे। मैं तो अैसे स्मारकोंको 'वि-स्मारक' ही नाम देता हूं। अभी मैं नालंदा गया था। वहां पुराने बौद्ध विद्यापीठके खंडहर देखे, जिनमें अेक मूर्तिके पांवके नीचे शंकर-पार्वतीको रखा है। मूर्तिकारने अुसे बौद्ध-धर्मका स्मारक समझा था। लेकिन वह विस्मारक साबित हुआ। अैसी कअी मिसालें दी जा सकती हैं। 'स्थूल स्मारक' 'वि-स्मारक' ही नहीं, बल्कि कअी मर्तबा 'अप-स्मारक' भी हो जाते हैं। अिसलिअे गुण-स्मरण, गुण-चिंतन और गुणानुसरण ही सच्चा स्मारक है, अैसा समझकर हम सब धर्माचरण करते चले जायं, तो सब ऋषियोंका अुससे सहज तर्पण होगा।

पड़ाव: बरहट, बिहार १-९-'५३ **विनोबा**

('सर्वोदय'से)

किशोरलाल मशरूवालाकी पुस्तकें

जीवनशोधन

कीमत ३-०-० डाकखर्च ०-११-०

जड़मूलसे क्रान्ति

कीमत १-८-० डाकखर्च ०-६-०

स्त्री-पुरुष-मर्यादा

कीमत १-१२-० डाकखर्च ०-६-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

हाथ-कागज

[१९५३-'५४के लिअे योजना]

देशमें हाथ-कागजका अुद्योग कहां कितना चल रहा है, अिसके विषयमें ठीक आंकड़े प्राप्त नहीं हैं। अिस अुद्योगके मौजूदा केन्द्रोंमें से ११ ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं, जहां काम कर रहे कागदियोंकी कुल संख्या १०५५ है।

चूंकि यह अुद्योग कअी तरहके कागज — अुदाहरणके लिअे, कानूनी दस्तावेजोंके जरूरी कागज, स्टेम्प-पेपर, ड्राअिंग-पेपर, फिल्टर-पेपर (छन्ना-कागज), मढ़नेके लिअे पुट्ठे आदि — का निर्माण कर सकता है, अिसलिअे अिसका विकास करनेकी बड़ी आवश्यकता है।

समस्याअें

विदेशसे आयात किया जानेवाला दस्तावेजोंका कागज, ड्राअिंग-पेपर, फिल्टर-पेपर आदि स्वदेशी कागजकी अिन किस्मोंके साथ होड़ करता है।

मौजूदा केन्द्र जल्दीसे जल्दी अितना बढ़िया माल तैयार करने लगें जो अुसी तरहके विदेशी मालकी जगह ले सके, अिसके लिअे अुन्हें अुपयुक्त साधन मुहैया करने पड़ेंगे और शास्त्रीय तालीम भी देनी पड़ेगी। चीन और जापानमें बरसाती कोट, खिड़कियोंके परदे, छाते आदिके अुपयोगमें आनेवाला कागज बनाया जाता है; वैसा कागज हमारे यहां तैयार हो सकता है या नहीं, अिसकी जांचके लिअे शोध करनेकी आवश्यकता होगी।

कागज-अुद्योगके अैसे मुख्य केन्द्रोंको, जहां अुद्योग कारीगर-वर्गके मजदूरोंके जरिये चलाया जाता है, विकसित करनेका हमारा अिरादा है। अिन लोगोंको आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिके विषयमें मदद और मार्गदर्शन करनेकी आवश्यकता है, ताकि वे कागजकी अुन किस्मोंका अुत्पादन कर सकें, जो अभी अपनी विशेषताओंके कारण बाहरसे बुलायी जाती हैं।

अिन केन्द्रोंमें कुछ खास किस्मके कागजोंका अुत्पादन करवाने पर ध्यान देना होगा, क्योंकि अिन किस्मोंकी अपनी विशेषताअें हैं और वे बाजारमें अपने गुणोंके बल पर टिक सकती हैं।

सांगानेर (राजस्थान) और औरंगाबाद कागज-अुत्पादनके सबसे बड़े केन्द्र हैं। अिन दोनों जगहोंमें अेक-अेक कागज विशेषज्ञ रखनेकी बात सोची गयी है। केन्द्रीय दफ्तरके कर्मचारियों द्वारा दूसरे केन्द्रोंको भी कागज-निर्माणके विषयमें वैज्ञानिक सलाह मिलती रहेगी।

योजनाका अेक ध्येय यह भी है कि कागज-निर्माणका अुद्योग माध्यमिक शालाओंमें दाखिल कर दिया जाय। सन् १९५३-५४ में अूपर जिन केन्द्रोंका अुल्लेख हुआ है, अुनमें से १० केन्द्रोंके आसपास केन्द्रवार ५ स्कूलोंके हिसाबसे कागज-निर्माणका काम दाखिल कर दिया जायगा। प्रत्येक स्कूलको रु० ५०० की ग्रान्ट दी जायगी; रु० ४०० साधन-सामग्रीके लिअे और रु० १०० शिक्षकोंको तीन माह तक कागज बनानेकी तालीम देनेके लिअे।

अनुसंधान और अलग-अलग केन्द्रोंके कामको संयोजित करनेके लिअे अेक केन्द्रीय संस्थाकी स्थापना की जायगी। अुसके काम निम्न-लिखित होंगे :—

(१) हाथ-कागजके विकासके लिअे व्यवस्था करना,
(२) अनुसंधान और तालीमके काममें मार्गदर्शन करना और सलाह देना,
(३) अिस अुद्योगकी अुन्नति करना और समय-समय पर जो कठिनाअियां पैदा हों अुन्हें सुलझानेमें मदद करना,
(४) हाथ-कागज अुद्योगसे संबंधित आंकड़े और जानकारी अिकट्ठी करना और मालकी अच्छाअी कायम रखना,
(५) हाथ-कागज द्वारा सरकारकी जरूरतें पूरी करनेकी व्यवस्था करना।

[अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा प्रकाशित बुलेटिनसे।]
(अंग्रेजीसे)

रेलवे-विभागमें अनीति

हमारे देशमें शहरों और शहरोंसे संबंध रखनेवाले लोगोंके लिअे अब रेलवेका अुपयोग लगभग अनिवार्य बन गया है। अिसलिअे रेलवे और अुसकी व्यवस्था शहरी समाजकी अेक बहुत बड़ी आवश्यकता हो गअी है। भारतके लोकसत्तात्मक राज्य होनेसे रेलवेका राष्ट्रीयकरण करीब-करीब पूरा हो गया है और रेलवे अब देशकी अेक संपत्ति मानी जाने लगी है।

लेकिन साथ ही यह बात भी स्पष्ट है कि अनीतिके भिन्न-भिन्न मार्गोंको अुत्तेजन देकर लोक-जीवनकी नीतिका स्तर गिरानेमें और अुसे मदद देनेमें रेलवेका काफी हाथ रहा है। और मुझे लगता है कि यदि जनताका जाग्रत वर्ग अिस दिशामें जागरूक नहीं रहा तो यह डर है कि रेलवे, जो अब अनिवार्य अंग बन रही है, भविष्यमें अराजकता फैलानेमें भारी मदद करेगी। दुर्भाग्यसे प्रजाकी ओरसे रेलवे अधिकारियोंकी आंख खोलनेके लिअे किये जानेवाले प्रयत्नोंकी ओर आम तौर पर रेलवे-विभागने बिलकुल ध्यान ही नहीं दिया है। परिणामस्वरूप प्रजाको अन्याय और अप्रामाणिकताकी ओरसे आंखें बन्द कर लेनेकी आदत पड़ गअी है। यहां मैं अेक मिसाल देता हूं :—

पिछली ता० १६-८-'५३ को सुबह ९ बजे मैंने अहमदाबाद स्टेशन पर, जहां यह बताया गया है कि तीसरे दर्जेके टिकटकी अेक खिड़की २४ घंटेके लिअे खुली रहती है, रातकी गाड़ीके लिअे टिकट लेनेको आदमी भेजा। वह आदमी यह जवाब लेकर वापस आया कि तीसरे दर्जेका टिकट रिजर्वेशनके साथ शामको साढ़े सातके बाद मिलेगा। यह व्यवहार तीसरे दर्जेकी लंबी मुसाफिरी करनेवाले यात्रियोंको खुले रूपमें दी गयी सुविधाके खिलाफ था, और अिसलिअे वह मुझे बहुत अजीब मालूम हुआ। मैंने रेलवे-अधिकारियोंको फोन किया। थोड़ी बकझकके बाद जवाब मिला, "आदमीको फिरसे भेजकर टिकट मंगा लीजिये।" मैंने अिस व्यवहारके खिलाफ सख्त विरोध प्रगट किया और बताया कि अुससे मुझे कितनी परेशानी हुअी है। अिस पर अेकदम अुत्तर मिला, "आपके आदमीने बताया होता कि वह . . . . की तरफसे आया है, तो टिकट तुरंत दे दिया जाता।" अिस जवाबसे मुझे और भी ज्यादा आघात लगा। रेलवेने जो सुविधा देना तय कर लिया है, यदि अुसे पानेके लिअे भी अपने व्यक्तिगत प्रभावका अुपयोग करनेकी जरूरत पड़े, तो निश्चय ही अुसका लाभ गरीब जनताको नहीं मिल सकता। अैसे दुःखद अनुभव तीसरे दर्जेके यात्रियोंके लिअे रोजकी चीज हैं। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि अुन्हें अिस तरहके दुर्व्यवहारके खिलाफ शिकायत करनेकी आदत नहीं है। रेलवेकी सलाहकार समितियोंके सदस्यों तथा अिस प्रश्नमें रस लेनेवाले दूसरे लोगोंसे मेरा नम्र अनुरोध है कि वे तीसरे दर्जेके यात्रियोंकी अिन कठिनाअियोंके प्रति ज्यादा सावधानी दिखावें। अिसके सिवा, रेलवे-अधिकारियोंको मेरी नम्र सूचना है कि वे कुछ खास लोगोंको विजिटर्सकी तरह चुनें, और ये लोग रेल-यात्रियोंकी अिन कठिनाअियोंके विषयमें जो शिकायत करें, अुसे दूर करनेके लिअे तत्काल कदम अुठाये जायं।

यदि जनता और रेलवे-अधिकारी अिस विषयमें गंभीर ध्यान नहीं देंगे, तो मुझे डर है कि अनीतिका यह बढ़ता हुआ रोग समाज-जीवनको अधिक कलुषित कर देगा।

(गुजरातीसे)

परीक्षितलाल मजमूदार

www.vinoba.in

सेनामें शराबकी बुराओ

अेक बहनने मुझे नीचे लिखी चिट्ठी भेजी है। चिट्ठी महत्त्वपूर्ण है, अतः अुसे लोगोंके विचारार्थ प्रकाशित करता हूं:

"कोरिया जानेवाली हमारी कस्टोडियन सेनाको दिया हुआ आपका अुपदेश मैंने विशेष ध्यानसे सुना, क्योंकि जानेवालोंमें मेरे पति भी हैं। आपका दिया हुआ संदेश अुन अनेक संदेशोंमें, जो अिस यात्री-दलको जानेके पूर्व प्राप्त हुअे हैं, सर्वोत्तम था। अुसमें आत्मीयता और प्रेमका भाव था। लेकिन अगर आप अनुमति दें, तो मैं कहना चाहती हूं कि अिस संदेशमें आपने शराबका जिक्र भी कर दिया होता, तो अिस अवसरके लिअे वह और ज्यादा अुपयोगी बन जाता। कितना अच्छा होता अगर आप अुन्हें यह सलाह देते कि वे शराबसे पूरा परहेज न रखें, तो कमसे कम अुसमें मात्राकी मर्यादा अवश्य रखें। क्या आपको अैसा लगता है कि जब वे अेक शान्तिमय कामके लिअे जा रहे हैं, तब भी अुन्हें अपनी ताजगी बनाये रखनेके लिअे शराबकी जरूरत है? शराब हमेशा सबसे बड़ी बुराओ रही है और आज भी है। शराबने आज तक जितने घरोंका नाश किया है, अुतना किसी दूसरी चीजने नहीं। जिन स्त्रियोंके पति शराब पीते हैं, अैसी सारी दुनियाकी हजारों-लाखों स्त्रियोंका सुख और जीवन अिस शराबके ही कारण नष्ट हुआ है। आजकल दुनियामें जो अपराध या आकस्मिक विपत्तिकी दुर्घटनायें होती हैं, अुनमें ज्यादातर शराबके कारण ही होती हैं। सेनाके लोगोंमें अिस व्याधिकी जड़ बहुत गहरी फैली हुओ है। शराबबन्दी सेनामें क्यों नहीं लागू की जा सकती? मैं तो अक्सर यह आशा करती हूं कि अैसा होगा। जब सेनाके लोग देशके बाहर जाते हैं, तो शराब अुन्हें बहुत सस्ते दाममें मिलती है, और वहां अुन्हें कोओ रोकनेवाला भी नहीं होता। अिसका परिणाम यह होता है कि वे अुसे अुचितसे ज्यादा मात्रामें लेते हैं और अपने स्वास्थ्यकी हानि करते हैं। अुससे केवल स्वास्थ्यकी हानि होती है, अितना ही नहीं, वह प्राणोंके लिअे भी खतरनाक है। क्योंकि ज्यादा शराब पीनेके बाद आदमी अपने विचारों या कार्योंकी संबद्ध योजना नहीं कर सकता। वह न तो ठीक-ठीक विचार कर सकता है, और न अैसा कोओ कार्य, जिसमें सोच-विचार और योजनाकी आवश्यकता होती है। अुदाहरणके लिअे, वह मोटर नहीं चला सकता। लेकिन हकीकत यह है कि शराबकी पार्टियोंके बाद सेना-विभागमें काम करनेवाले पदाधिकारी हमेशा खुद ही मोटर चलानेका आग्रह रखते हैं। रात अंधेरी हो, तो मनकी अैसी मत्त अवस्थामें गाड़ी चलानेमें कितना खतरा है, यह आप खुद ही सोचियेगा। लेकिन ठीक अैसे मौकों पर ही अुन्हें यह खयाल हो जाता है कि अुन्हें बहुत अच्छा मोटर चलाना आता है, और वे अपनी जानकारी तथा अभ्यासका बिना कोओ खयाल किये अुसे तेजीसे दौड़ाते हैं।

"अिस खतरेके सिवा, अुसमें अेक और खतरा भी है, जो अुतना ही या अुससे ज्यादा भयंकर है। आपने अपने अुपदेशमें अुन लोगोंसे यह तो कहा कि वे स्त्रियोंकी तरफ न देखें, लेकिन यह नहीं कहा कि साथ ही वे शराब भी न छुअें। अगर वे शराब पीते हैं, तो आपके अुपदेशका अुन पर कोओ असर नहीं होगा। शराबके ही कारण अुनका मन स्त्रियोंकी ओर जाता है; और अगर किसी व्यक्तिने शराब पी हो, तो अुसे अैसा करनेसे रोका नहीं जा सकता। हम कल्पना करें कि अिसके दुष्परिणाम कितने दुःखद होते हैं। सब आदमियोंमें न तो अितनी संकल्प-शक्ति होती है और न अपनी स्त्रियोंके प्रति अितनी वफादारी कि वे सदाचारका पूरा-पूरा पालन करें। अिसके सिवा, वे अीश्वरसे डरनेवाले भी नहीं होते।

"अिसके कारण पैसेका अनाप-शनाप खर्च होता है; जिस पैसेका सदुपयोग अनेक दूसरी बातोंमें हो सकता था, वह शराब आदि पर अुड़ाया जाता है।

"आप तो यह सब जानते हैं, लेकिन तब भी आपका भाषण सुनने पर मुझे यह सब कहनेकी अिच्छा हुओ और मैं अपनेको रोक नहीं सकी। मैंने आपको सीधे पत्र लिखनेकी जो ढिठाओ की है, अुसके लिअे आप क्षमा करेंगे।"

अिसके बाद लेखिकाका अेक दूसरा पत्र भी आया:

"आपके जवाबकी मैंने कोओ आशा नहीं की थी, अिसलिअे जब वह आया तो मैंने बहुत गौरवका अनुभव किया। मुझे तो लगता था कि आपका भाषण अधूरा था — मेरे अिस कथन पर आप नाराज होंगे।

"आपका यह सोचना ठीक है कि मेरे पत्रके पीछे संवेदनाकी गहराओ है। आप खयाल कर सकते हैं कि मनमें कितने दुःख और आशंकाका बोझ रखते हुअे मैंने अपने पतिको बिदा दी।

"मैं अैसी कितनी ही दूसरी स्त्रियोंको जानती हूं, जो अिस शराबके बारेमें मेरी ही तरह सोचती हैं।

"मेरा नाम प्रगट किये बिना आप मेरी चिट्ठीका अुपयोग अवश्य कर सकते हैं।

"मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि आपकी मदद और प्रभावके फलस्वरूप हमारे देशसे, और खासकर सेनामें से, शराबकी यह बुराओ बिलकुल निर्मूल हो जाय।"

मद्रास, २९-८-'५३ च० राजगोपालाचार्य

(३१-८-'५३के 'हिन्दू' से)

अहिंसक माअू-माअू प्रतिज्ञा

बड़े प्राचीन कालसे अफ्रीकाका महाद्वीप गुलामोंकी खान रहा है। पहले वे पकड़ लिये जाते थे और फार्मों तथा बगीचोंमें काम करनेके लिअे बाहर भेज दिये जाते थे, जिनके मालिक अुनकी परवरिश करते थे और गुलामोंको कुछ होने पर अुनके लिअे पैसेका नुकसान भी अुठाते थे। आजकल अिस चीजने और भी आसान और सीधा रूप ले लिया है। अब बगीचे और बगीचोंके मालिक गुलामोंकी खानमें ही पहुंच गये हैं और गुलामोंको खाना, कपड़े तथा आसरेके बजाय थोड़ीसी मजदूरी दे दी जाती है। जब अफ्रीकी लोग गुलामीके कामकी भीख मांगने नहीं आते, तो अुनके छोटे-छोटे खेत अुनसे छीन लिये जाते हैं, अुन पर अनेक तरहके कर लादे जाते हैं और अुनकी हलचल पर अैसी कैद लगा दी जाती है कि अुनके लिअे गुलामी और मौतके बीच चुनाव करनेके सिवा कोओ चारा ही नहीं रह जाता।

आजका गोरा अफ्रीकाको पूरी तरह गोरोंसे ही नहीं भर देना चाहता। अैसा करनेसे अुसे कोओ लाभ नहीं होगा। वह सस्ते अफ्रीकी मजदूर चाहता है, क्योंकि अुनके बिना अुसका सारा आर्थिक ढांचा टूटकर चूर-चूर हो जायगा।

अिसलिअे अफ्रीकी लोगोंकी मुक्तिके लिअे अिसके सिवा और कोओ रास्ता नहीं है कि वे मजदूरी लेकर काम करनेसे बिलकुल अिन्कार कर दें। आज हर अफ्रीकीकी अेकमात्र प्रतिज्ञा, जो अफ्रीकामें सारी जातीय असमानताका अन्त कर देगी और हर अफ्रीकी पुरुष, स्त्री और बच्चेको आजाद बना देगी,

www.vinoba.in

यह होनी चाहिये : "मैं किसी मालिककी गुलामी नहीं करूंगा।" अिसका अर्थ भूखों मरना नहीं है। अिसका अर्थ अपने खेत पर, अपने कारखानेमें परिवारके साथ या छोटे-छोटे सहकारी दलोंके रूपमें काम करके खुदको रोजी देना है।

बेशक, अिस प्रतिज्ञा पर अमल करना कठिन है। अफ्रीकियोंको फुसलाकर, सताकर, घूस देकर या धमकाकर अुनसे पैसेके बल पर काम लेनेका हर तरीका अख्तियार किया जायगा। लेकिन अुनकी अिस प्रतिज्ञामें स्वाभाविक गौरव, अपने बल पर अेक मौन आत्म-विश्वास है। अिसके लिअे किसी प्रकारके दबावकी जरूरत नहीं है, यह हिंसासे सर्वथा मुक्त है। अेक आदमी भी अिसका रास्ता दिखा सकता है; अेक छोटासा झरना विशाल नदीका रूप ले सकता है। यह अैसा सही और शुद्ध साधन है, जो अनिवार्य रूपसे अुत्तम परिणाम ला सकेगा।

(अंग्रेजीसे) **मॉरिस फ्रिडमैन**

देशांतरवास और जातीयतावाद

"नैरोबी, २७ अगस्त, १९५३ — केन्याके युरोपियन लोगोंने आज यह प्रस्ताव किया कि अगले पांच सालमें अिस ब्रिटिश अुपनिवेशमें ३०,००० अतिरिक्त युरोपियनोंको बसाया जाय और अेशियावासियोंके बसने पर रोक लगायी जाय।

"युरोपीय निर्वाचकोंके मण्डलने अपने वार्षिक संमेलनमें अेक प्रस्ताव पास करते हुअे कहा कि केनियाके युरोपीय वर्गकी सुरक्षा अिसी बातमें है कि अब भारतीयोंको वहां और प्रवेश न करने दिया जाय तथा अुपनिवेशका विकास सिर्फ गोरे लोगोंकी बस्तीके रूपमें किया जाय। यह मण्डल करीब २०,००० युरोपियन लोगोंका प्रतिनिधित्व करता है।" — रायटर

अूपर दी हुअी खबर कअी दृष्टियोंसे विचारणीय है। अेक वह अफ्रीकाके अुस कृष्ण महाद्वीपमें रंगभेद पर आश्रित विभिन्न जाति-समुदायोंके बीच भावी युद्धकी आशंकाका निर्माण करती है। अन्यथा वहां बसनेवाली जनताका अेक बहुत ही छोटा वर्ग बाकी लोगों पर अपनी अेकदम अन्यायपूर्ण नीति कैसे लाद सकता है? पूर्वी अफ्रीकाकी कुल जनसंख्या १,८१,००,००० है, जिसमें गोरोंकी संख्या सिर्फ ४४,००० के आसपास है। केनियामें, ३०,००० युरोपियन हैं, ९०,००० भारतीय, २४,००० अरब और पचास लाख अफ्रीका-निवासी हैं। केनियामें बसे हुअे अेक लाखसे ज्यादा अेशिया-वासियोंकी स्थिति बिचौनियों जैसी है। वे सत्तारूढ़ धनिक युरोपियन वर्गके लिअे काम करते हैं। बेचारा अफ्रीकी निर्धन मजदूर है, जिसकी बढ़िया अुपजाअू जमीन आनेवालोंने अपने मनमाने कानून बनाकर छीन ली है और अुसे अपने लिअे सुरक्षित कर लिया है। अिसके सिवा, अुस पर प्रति मनुष्य पॉल टैक्स लगाया गया, जो सिर्फ सिक्कोंमें चुकाया जाता है और जिसे चुकानेके लिअे अुसे बाध्य होकर पैसा कमानेका काम करना पड़ता है। यद्यपि देश अुनका ही है, फिर भी अुन्हें अपने ही देशमें रजिस्ट्रेशन सर्टीफिकेट लेने और रखनेके लिअे बाध्य किया जाता है, जिस पर अुनके अंगूठों और अुंगलियोंकी छाप होती है। यह सारी परिस्थिति खयालमें रखकर ही हमें अूपर दी गअी खबरका विश्लेषण करना चाहिये।

दूसरोंके प्रति युरोपियन वर्गके अिस व्यवहारका अेक और पहलू भी है और अुसका हमें ध्यान रखना चाहिये। पश्चिमी लोग आजकल हमें लगातार यह अुपदेश करते रहते हैं कि हमारी संख्या बहुत ज्यादा है, और यदि हम गरीबी तथा भूखका कष्ट सह-सहकर मरना न चाहते हों, तो हमें प्रजोत्पत्तिका नियंत्रण करना चाहिये और अपने बाजार पश्चिम द्वारा प्रस्तुत गर्भ-निरोधके साधनोंकी बिक्रीके लिअे खोल देने चाहिये। अफ्रीका और आस्ट्रेलिया आदिमें जनसंख्या बहुत विरल है और अुन देशोंके विकासके लिअे यह जरूरी है कि लोग वहां बाहरसे जाकर बसें तथा वहांकी संपत्तिका लाभ अुठायें। लेकिन अपने शस्त्र-बलकी अधिकताके आधार पर ये लोग हमें वहां जा बसनेसे रोकते हैं। हां, वे युरोपियन लोगोंको जरूर वहां बसाना चाहते हैं। बाहरसे आकर बसनेवालों पर रंग-भेदकी नीतिसे प्रेरित यह रोक बहुत खराब है। अुसके कारण अेक ओर सुखद आन्तरराष्ट्रीय संबंधोंके निर्माणमें बाधा अुत्पन्न होती है, दूसरी ओर वह बताती है कि पश्चिमके अर्थशास्त्रियों और समाजशास्त्रियोंका हमें सन्तति-नियमनका अुपदेश करना कितना थोथा है। अुन्हें यह क्यों नहीं सूझता कि दुनियाके कुछ हिस्सोंमें आबादीके ज्यादा होने और कुछमें कम होनेकी समस्याको हल करनेका सरल अुपाय यह है कि किसी आन्तरराष्ट्रीय सत्ताकी देखरेख और व्यवस्थामें ज्यादा आबादीवाले हिस्सोंसे लोगोंको अुचित संख्यामें कम आबादीवाले हिस्सोंमें भेज दिया जाय। लेकिन पश्चिमके लोग अिसके लिअे तैयार नहीं हैं। अुलटे, यदि अुनकी अिस स्वार्थपरताके खिलाफ पीड़ितोंमें कोअी प्रतिक्रिया पैदा होती है, तो वे अुसका दुष्टतापूर्वक दमन करते हैं; अुदाहरणके लिअे, माअू-माअू आन्दोलनको जिस तरह दबाया गया है, अुसमें माअू-माअूकी सारी बुराअी मौजूद है। अिसी तरह दक्षिण अफ्रीकामें भारतीयोंने सरकारकी नीतिका कुछ विरोध किया, तो अुसने अैसे कानून बनाने शुरू कर दिये जिससे कोअी अेशियावासी वहां रह ही न सके। कहनेकी जरूरत नहीं कि यह न्यायकी भावना और यूनोके घोषणा-पत्रके प्रतिकूल है। अेक अैसे प्रदेशमें, जो अुनका नहीं है और जहां अुनकी संख्या कुल आबादीका बहुत कम अंश है, गोरे लोगोंकी यह दुरभिमानपूर्ण मनोवृत्ति दुनियाकी शान्तिके लिअे बड़ा खतरा है; पूर्व और पश्चिमके संबंध खराब करनेमें वह अेक बड़ा प्रेरक कारण है। हम आशा करते हैं कि केनियाकी सरकार, जो ब्रिटिश कॉमनवेल्थका ही अेक हिस्सा है, अुक्त निर्वाचक मंडलके अिस प्रस्तावको, जो जाति और रंगके अपमानजनक आधार पर प्रजामें भेदभाव करता है, स्वीकार करके अुनकी स्वार्थ-वृत्तिको प्रोत्साहन नहीं देगी।

५-९-'५३ **मगनभाअी देसाअी**
(अंग्रेजीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
शिक्षा और सेवा	मगनभाअी देसाअी	२२५
भूमिदान	रामधारीसिंह 'दिनकर'	२२७
अेक गलतीके खिलाफ दूसरी गलती	मगनभाअी देसाअी	२२८
आत्म-लोकवासी किशोरलालभाअी	विनोबा	२२९
हाथ-कागज		२३०
रेलवे-विभागमें अनीति	परीक्षितलाल मजमूदार	२३०
सेनामें शराबकी बुराअी	च० राजगोपालाचार्य	२३१
अहिंसक माअू-माअू प्रतिज्ञा	मॉरिस फ्रिडमैन	२३१
देशान्तरवास और जातीयतावाद	मगनभाअी देसाअी	२३२
टिप्पणियां :		
बीड़ीका व्यसन और आरोग्य	गोकुलभाअी भट्ट	२२६
दृष्टिदान	सोराबजी मिस्त्री	२२६
कृत्रिम खाद	म० प्र०	२२६
मध्यप्रदेशकी राजभाषायें	म० प्र०	२२७

www.vinoba.in